एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 08 (अगस्त, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

बाजरे की मुख्य बीमारियाँ, कीट और उनकी रोकथाम

*विनोद कुमार मलिक[1] एवं पंकज यादव[2]
[1]पादप रोग विज्ञान विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत
[2]कृषि विज्ञान केन्द्र, हिसार, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: raopankaj000@gmail.com

बाजरा शुष्क एवं कम वर्षा वाले क्षेत्रों की प्रमुख फसल है। यह फसल अधिक तापमान एवं सूखे के प्रति सहनशील है। कम वर्षा एवं अधिक तापमान वाले क्षेत्रों में खेती करने वाले किसानों के लिए यह फसल एक अच्छा विकल्प है। यह मुख्य रूप से राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा में उगाई जाती है। हरियाणा राज्य में यह फसल बारानी क्षेत्रों, विशेषकर महेंद्रगढ़, भिवानी, चरखी दादरी, रेवाड़ी, गुरुग्राम, हिसार, रोहतक व झज्जर जिलो में उगाई जाती है। बाजरे के 100 ग्राम खाद्य हिस्से में लगभग 11.6 ग्राम प्रोटीन, 67.5 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.8 मिलीग्राम लौह तत्व और 132 माइक्रोग्राम कैरोटीन तत्व मौजूद होता हैं, जो हमारी आँखों की सुरक्षा करता हैं। अधिक ऊर्जा होने के कारण बाजरे को सर्दियों के मौसम में खाने में अधिक प्रयोग किया जाता हैं। बाजरे की फसल में लगने वाले रोगों एवं कीटों के कारण वर्ष दर वर्ष इसकी उत्पादकता में कमी दर्ज की जाती रही है। बाजरे में लगने वाले कीटों एवं रोगों की सही जानकारी व समय पर उचित निवारण करके किसान इसकी अच्छी पैदावार ले सकते है।

बाजरे की बीमारियाँ एवं उनकी रोकथाम

डाउनी मिल्ड्यू : यह रोग अंकुरण के समय एवं पौधों की बढ़तवार के समय शुरु होता है। इससे प्रभावित पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाती है और बढ़तवार रुक जाती है। प्रातःकाल में पौधों की निचली पत्तियों पर सफेद चूरणनुमा पदार्थ दिखाई देता है। रोग की उग्र अवस्था में प्रभावित पौधों पर बालियाँ नहीं बनती है व पूरी फसल नष्ट हो जाती है। जब इस रोग का प्रकोप बाली बनने की अवस्था में होता है, तो बालियों पर दाने के स्थान पर छोटी–छोटी हरी पत्तियां उग जाती है। इसी कारण इसे हरी बाली रोग भी कहा जाता है।

रोकथाम

- फसल चक्र सिद्धान्त का प्रयोग करें एवं खेत की गहरी जुताई करें।
- बिजाई से पहले बीजों को 4 ग्राम थाइरम या 6 ग्राम मैटालेक्सिल 35 प्रतिशत की दर से सुखा उपचार करें।
- रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दे।
- रोग ग्रस्त पौधों को निकालने के बाद फसल पर 0.2 प्रतिशत जिनेब या मेन्कोजेब के घोल (500 ग्राम दवा व 250 लीटर पानी प्रति एकड) के हिसाब से छिड़काव करें।

कांगियारी (स्मट) : इस बीमारी में बालियों की शुरु की अवस्था में कई जगहों पर रोगी दाने बन जाते है, जो आकार में बड़े, चमकदार व गहरे हरे रंग के होते है। रोग ग्रस्त दाने जब फटते है तो उनमे से काले रंग का चूरण निकलता है जिसमे रोग जनित फफूंद के असंख्य बीजाणु होते हैं।

रोकथाम

- बीमारी की अधिकता वाले क्षेत्रों में 3–4 साल का फसल चक्र अपनाए।
- मई–जून में खेत की गहरी जुताई करके खुला छोड़ दे जिससे तेज धूप में रोग के अवशेष नष्ट हो जायेंगे।
- बिजाई से पहले बीजों को 4 ग्राम थाइरम की दर से सुखा उपचार करें।

अरगट : यह रोग बाली बनते समय बाजरे को नुकसान पहुचाता है। रोगग्रस्त पौधों में बालियों पर शहद जैसी चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं। शहद के समान दिखाई देने वाला यह पदार्थ कुछ दिनों बाद सुखकर गाढा पड़ जाता हैं जिसे अरगट के नाम से जाना जाता हैं। यह मानव एवं पशुओं के लिए हानिकारक होता हैं।

रोकथाम

- फसल की अगेती व समय (जून के अंतिम सप्ताह या जुलाई के पहले सप्ताह) पर बिजाई करें।
- मई–जून में खेत की गहरी जुताई करके खुला छोड़ दे ताकि अरगट के स्क्लोरेशिया नष्ट हो जाए।
- यदि किसान खुद का बीज उपयोग करे तो बिजाई से पहले बीजो को 10 प्रतिशत नमक के घोल में 10 मिनट तक डुबोए और तैरते हुए पिंडो को निकालकर नष्ट कर दे।

- बिजाई से पहले बीजों को 4 ग्राम थाइरम की दर से सुखा उपचार करें।
- अरगट से प्रभावित बालियों को जलाकर नष्ट कर दे।

बाजरे के कीट एवं उनका रोकथाम

सफेद लट : असिंचित क्षेत्रों में यह कीट अत्यधिक नुकसान पहुँचाता हैं। इसकी सुंडी सफेद रंग की होती है जिसका सिर भूरा होता है। यह कीट बाजरे की जड़ो को काटकर उन्हें नुकसान पहुचाता हैं। इसके प्रोढ़ भूरे व हलके भूरे रंग के होते है जो मानसून की पहली बरसात के साथ जमीन से निकलकर आसपास के पेड़ों की पत्तियों को खाते हैं। प्रोढ़ कीट सुबह होने पर खेत की गीली मिट्टी में छुपकर अंडे देते हैं जिनसे लट्टे निकलकर फसलो की जड़ो को खाती हैं तथा ग्रसित पौधे पीले होकर सुख जाते हैं।

रोकथाम

- पहली वर्षा के बाद पेड़ों पर इकट्ठे हुए प्रोढ़ कीटो को पेड़ से गिराकर एकत्रित करके मिट्टी के तेल के घोल में डालकर नष्ट कर दे।
- पहली, दूसरी व तीसरी वर्षा के बाद प्रौढ़ कीटो को मारने के लिए खेतो में खड़े वृक्षों पर 0.04 प्रतिशत मोनोक्रोटोफॉस 36 एस. एल. या 0.05 प्रतिशत क्विनलफॉस 25 ई.सी. का छिडकाव करें।

बाजरे की भूंडी : यह भूंडी स्लेटी रंग की होती हैं जो पत्तियों को किनारे से खाकर नुकसान करती हैं। इसका प्रकोप अगस्त से अक्तूबर तक देखा जा सकता हैं।

रोकथाम

- भूंडी की रोकथाम के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 250 ली. पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से छिडकाव करें।

बालों वाली सूंडियां : इस कीट का प्रकोप मानसून की बारिश के तुरंत बाद शुरू होकर अक्तूबर तक रहता हैं। रेतीले क्षेत्रो में इन सूंडियो का प्रकोप अधिक होता हैं। इसकी सूंडियां पत्तियों को खाकर छलनी कर देती हैं तथा अधिक प्रकोप होने पर पूरी फसल नष्ट हो जाती हैं। ये सूंडियां लंबे तथा घने बालो वाली, भूरे पीले या काले रंग की होती हैं। इसकी दो प्रजातियाँ होती हैं बिहार हैयरी व रेड हैयरी केटरपिलर। इसके पतंगे पत्तो पर इकट्ठे अंडे देते हैं और उन्हें बालो से ढक देते हैं। पहली अवस्था में सूंडियां अंडो से निकलकर पत्तो की निचली सतह पर इकट्ठा होकर खाती हैं और पत्तो को छलनी कर देती हैं।

रोकथाम

- खरीफ फसलों की कटाई के बाद गहरी जुताई करें। जिससे इस कीट के प्यूपा जमीन के बाहर आ जाते हैं जो पक्षियों द्वारा व अन्य कारणों से नष्ट हो जाते हैं।
- खेतों के आसपास खरपतवारों को नष्ट कर दे।
- यह कीट समूह में अंडे देते हैं, अतः समूह को पत्ती सहित तोड़ कर खत्म कर दें।
- लाल बालों की सूंडी के पतंगे रोशनी की तरफ आकर्षित होते हैं। पहली बारिश के उपरांत एक महीने तक प्रकाश प्रपंच का उपयोग करें।
- जरुरत पड़ने पर सूंडियों की रोकथाम के लिए 250 मि.ली. मोनोक्रोटोफॉस 36 एस. एल. या 500 मि.ली. क्विनलफॉस 25 ई.सी. का प्रति एकड की दर से छिडकाव करें।